CLASS- 10
SUBJECT- SECOND LANGUAGE (HINDI)
POEM 8- भिक्षुक
- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

प्रस्तुत कविता भिक्षुक में कवि श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी ने एक भिखारी की दयनीय दशा का वर्णन करते हुए समाज के समर्थ वर्ग को उनका कर्तव्य समझाने की कोशिश की है। यहां एक भिक्षुक अपने भाग्य पर दुख प्रकट करता हुआ तथा अपने मन में बहुत ही पछताता हुआ मार्ग में चलता हुआ चला आ रहा है। वह लाठी टेककर चल रहा है। भूख के कारण उसका पेट इतना सिकुड़ गया है कि पेट और पीठ एक में जुड़े हुए से प्रतीत हो रहे हैं \ वह इतना कमजोर है कि वह लाठी के सहारे के बिना चल भी नहीं पा रहा। वह लाठी टेकता हुआ चल रहा है और सोच रहा है कि शायद उस लाठी की आवाज से ही किसी दयावान का ध्यान उसकी दुर्दशा की ओर खिंच जाए और शायद वह मुट्ठी भर अनाज के दाने उसकी फटी पुरानी झोली में डाल दे। यदि ऐसा हो पाता तो उन मुट्ठी भर अनाज के दानों के सहारे ही वह अपना तथा अपने परिवार का किसी प्रकार आधा अधूरा ही पेट भर पाएगा। उसकी ऐसी स्थिति को देखकर कवि का हृदय द्रवित हो उठता है। वह अपनी दशा पर दुखी होता हुआ रास्ते पर चलता चला जा रहा है। उसे शायद इस बात का भी पछतावा है कि वह जिन लोगों के सामने अपनी झोली फैला रहा है; उनके घर तो अनाज के ढेर से भरे हैं परंतु उनके मन में किसी के भी प्रति प्रेम ममता या दया बिल्कुल भी नहीं है।

उसके साथ उसके दो बच्चे भी हैं। वे बच्चे अपने दाहिने हाथ को फैला कर भिक्षा मांग रहे हैं कि शायद कोई उन पर तरस खाकर उन्हें कुछ दे तथा अपने बाएं हाथ से वे अपने पेट को मलते हुए चल रहे हैं। वे ऐसा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि उन्हें बहुत तेज भूख लगी है और वे लोगों को यह दिखाने की कोशिश भी कर रहे हैं कि वे भूखे हैं। शायद वे ऐसा इसलिए भी कर रहे हैं कि उनके इस संकेत को समझ कर किसी दयावान के हृदय में कुछ दया आ जाए और बदले में उन्हें कुछ मिल जाए। काफी समय से भूखे रहने के कारण उनके होठ बुरी तरह सूख गए हैं और उन होठों पर पपड़ी पड़ गई है। इस समय उनकी मदद करने वाला कोई भी व्यक्ति उनके लिए ईश्वर से कम नहीं होगा अर्थात उनका भाग्य निर्माता ही होगा; परंतु उन्हें लोगों से अपने भूख और मजबूरी के बदले अपमान ही प्राप्त होता है। वह इस अपमान और दुख के आंसुओं को पीकर रह जाते हैं क्योंकि उनके पास और कोई चारा भी तो नहीं है। यही समाज की सच्चाई है। यही कारण है कि उनकी दीन हीन दशा को देखकर कभी का हृदय दुख से द्रवित हो उठता है।

तीसरे पद में कवि उस भिक्षुक की दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि भूख मनुष्य से कुछ भी करवा सकती है। असहनीय भूख की दशा में भिक्षुक तथा उसके बच्चे सड़क के किनारे पड़ी हुई जूठी पत्तले चाटने लगते हैं। इससे उनकी भूख तो नहीं मिट सकती पर थोड़ी हिम्मत जरूर मिल जाती है और उनका दुर्भाग्य तो देखिए कि उन पत्तलो को छीनने के लिए कुत्ते भी वही अड़े हुए हैं। इस प्रकार कवि कहना चाहते हैं कि इस भिक्षुक और उसके साथ के दोनों बच्चों की अवस्था पशुओं से भी बुरी है। वहां खड़े कुत्तों को भी शायद भोजन मिल जाता है परंतु इन भिखारियों के साथ कोई दया नहीं दिखाता। कवि के हृदय में इन भिक्षुओं के प्रति ढेर सारी सहानुभूति उमड़ आती है। वे कहते हैं कि उनकी दशा भी अभिमन्यु जैसी हो सकती है यदि उनमें इतनी हिम्मत हो। जिस प्रकार अभिमन्यु ने अकेले ही चक्रव्यूह का भेदन किया था ठीक उसी प्रकार यदि इस भिक्षुक में भी अपनी लड़ाई लड़ने की हिम्मत हो तो कवि उसका साथ देने को तैयार हैं। वे भिक्षुक के दर्द को, उसकी असफलता को, उसकी दीन हीन दशा को, अपनी कविता के माध्यम से लोगों तक पहुंचाएंगे ताकि उनके हृदय में भी ऐसे अन्य भिक्षुओं के प्रति प्रेम तथा सहानुभूति का भाव जागृत हो तथा वह उनकी मदद करने को तत्पर रहें।

---

1) व्याख्यामूलक प्रश्न -

वह आता -
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट - पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
मुंह फटी पुरानी झोली को फैलाता -
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता

क) 'वह आता' में कवि ने 'वह' किसके लिए प्रयुक्त किया है?
ख) भिक्षुक के पेट पीठ एक क्यों हो गए हैं? वह लाठी के सहारे क्यों चल रहा है?
ग) अपनी क्षुधा (भूख) शांत करने के लिए वह क्या प्रयत्न करता है?
घ) इन पंक्तियों के आधार पर भिक्षुक की दीन दशा का वर्णन कीजिए।

2) चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।
ठहरो, अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूंगा।
अभिमन्यु - जैसे हो सकोगे तुम,
तुम्हारे दुख मैं अपने हृदय में खींच लूंगा।

क) अंत में भिक्षुक क्या करने को मजबूर हो जाता है?

ख) 'और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।

ग) कवि ने अभिमन्यु का उदाहरण क्यों दिया है?

घ) कविता का केंद्रीय भाव लिखें।

Note - कविता अभ्यास पुस्तिका (Poem work book) से भिक्षुक पाठ के सभी प्रश्नों को अभ्यास पुस्तिका में ही हल करें।